कर्म बन्धन का कारण–कर्त्ताभाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा चेतनायुक्त है। आत्मा न तो कर्मों से बंधता है और न मुक्त होता है, ऐसा सांख्य दर्शन का मानना है। आत्मा या पुरुष और प्रकृति ये दो मुख्य तत्व है। प्रकृति कर्म करती है और वही बंधती है। परन्तु अज्ञान के कारण पुरुष प्रकृति के कार्य को अपना समझने लगता है यही उसका बंधन है। पुरुष जैसा कार्य करता है उसका फल भोगने के लिए शरीर धारण करता है। पुरुष के अज्ञान का कारण है कर्त्ताभाव। अनेक तत्वों के संयोग से किसी कार्य का निस्पादन होता है किन्तु अन्य तत्वों को छोड़कर पुरुष यह मान लेता है कि मैं ही इस कार्य का करता–धरता हूं। कर्म मुख्यतः दो प्रकार के है– घाती कर्म और अघाती कर्म। घाती कर्म आत्मा के स्वभावगत गुणों को नुकसान पहुंचाता है और अघाती कर्म वे कर्म है जो आत्मा के स्वाभाविक गुणों को नष्ट नहीं करते किन्तु बंधन के कारण होते है। चाहे लोह की श्रृंखला हो या स्वर्ण की दोनों से बंधन होता है। अतः जब तक काम, क्रोध, मद, लोभ जैसे कषाय आत्मा के साथ रहेंगे बंधन होगा ही क्योंकि इससे आत्मा में कर्त्ताभाव जाग्रत हो जाता है। बंधन का कारण कर्त्ताभाव है। मैं और मेरा का अहंकार का कर्त्ताभाव है। दार्शनिक दृष्टि से यदि हम चिंतन करे तो बंधन और मुक्ति जीव के लिए है। कर्मों का बंधना बन्धन है। जो बंधे या जिसके द्वारा बांधा जाये या बन्धन मात्र को बन्ध कहते हैं। कषाय सहित होने से जीव कर्म के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है, वह बन्ध हैं। कर्म प्रदेशों का आत्मप्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह हो जाना, बन्ध है। मिथ्यादर्शनादि द्वारों से आए हुए कर्म पुद्गलों का आत्मप्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह हो जाना बन्ध है। जैसे बेड़ी आदि से बंधा हुआ प्राणी परतन्त्र हो जाता है और इच्छानुसार देशादि में नहीं आ–जा सकता, उसी प्रकार कर्मबद्ध आत्मा परतन्त्र होकर अपना इष्ट विकास नहीं कर पाता। अनेक प्रकार के शरीर और मानस दुःखों से दुःखी होता है। राग–द्वेषादि के निमित्त से जीव के साथ पौद्गलिक कर्मों का बन्ध निरन्तर होता है। जीव के भावों की विचित्रता के अनुसार वे कर्म भी विभिन्न प्रकार की फलदान शक्ति को लेकर आते हैं, इसी से वे विभिन्न स्वभाव या प्रकृति वाले होते हैं। प्रकृति का अर्थ स्वभाव है। जिस प्रकार

नीम की क्या प्रकृति है? कडुआपन। गुड़ की क्या प्रकृति है? मीठापन। उसी प्रकार ज्ञानावरण कर्म की क्या प्रकृति है? अर्थ का ज्ञान न होना इत्यादि। जीव के प्रदेशों की उथल–पुथल को अस्थिति तथा उथल–पुथल न होने को स्थिति कहते हैं। जिसका जो स्वभाव है, उससे च्युत न होना स्थिति है। जिस प्रकार बकरी, गाय और भैंस आदि के दूध का माधुर्य स्वभाव से च्युत न होना स्थिति है, उसी प्रकार ज्ञानावरण आदि कर्मों का अर्थ का ज्ञान न होने देना आदि स्वभाव से च्युत न होना स्थिति है। विविध प्रकार के पाक अर्थात् फल देने की शक्ति का पड़ना ही अनुभव है। शुभाशुभ कर्म की निर्जरा के समय सुख–दुःख रूप फल देने की शक्ति वाला अनुभाग बन्ध है। कर्म रूप से परिणत पुद्गल स्कन्धों का परमाणुओं की जानकारी करके निश्चय करना प्रदेशबन्ध है। दो के बिना बन्ध नहीं होता। एक हाथ से ताली नहीं बज सकती, उसी प्रकार बन्ध तत्त्व भी एक के बीच में नहीं हो सकता। सांसारिक जो विषय–सामग्री है वह, और उसका जो भोक्ता है आत्मा ये दोनों संयोग होते ही बन्ध हो जाते हैं। कर्म पुद्गलों के ग्रहण को बन्ध कहा जाता है। जीव के द्वारा कर्म पुद्गलों के ग्रहण का क्षीर–नीर की भांति परस्पर आश्लेष होता है, उसे बन्ध कहा जाता है। वह प्रवाहरूप से अनादि और जो भिन्न–भिन्न कर्म बंधते रहते हैं, उनकी अपेक्षा सादि है। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और मन, वचन, काय की प्रवृत्ति, ये सब कर्मों के आने के द्वार होने से आस्रव हैं। इनसे विपरीत सम्यक्त्व, देशव्रत, महाव्रत, मोह व कषायहीन शुद्धात्म परिणति तथा मन, वचन, काय के व्यापार की निवृत्ति ये सब नवीन कर्मों के निरोध के हेतु होने से संवर हैं। आसव्र का निरोध करना ही संवर है। जिनसे कर्म रुकें, कर्मों का रुकना संवर है। कर्मरज आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है। चतुःस्पर्शी पुद्गल से आत्माबद्ध होता है। आत्मा का विशिष्ट गुण है चैतन्य। आत्मा प्रकाशमान है। भगवान् बुद्ध, भगवान महावीर मोक्ष गामी हुये, क्योंकि उनको यह ज्ञान था कि शरीर और आत्मा पृथक–पृथक तत्व है। कार्मण शरीर के कारण जीव सुखों में डूब जाता है। सत् असत् प्रवृत्ति के कारण कर्म आत्मा की तरफ आकृष्ट होकर आत्मा से चिपक जाता है। जिसके कारण आत्मा कर्मों से बद्ध हो जाता है। यह मेरा है, यह तुम्हारा है यही कर्त्ताभाव है और यही मिथ्यात्व है। यही कर्त्तापन है। जीव का चरम और परम लक्ष्य है– मोक्ष प्राप्ति। जिसने समस्त कर्मों का क्षय करके अपने साध्य को सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर ली वह मोक्ष का अधिकारी

है। बन्ध हेतुओं मिथ्यात्व व कषाय आदि के अभाव और निर्जरा से सब कर्मों का आत्यन्तिक क्षय होना ही मोक्ष है। कर्मों का पूर्ण रूप से छूटना मोक्ष है। सम्यग् दर्शनादि कारणों से सम्पूर्ण कर्मों का आत्यान्तिक मूलोच्छेद होना मोक्ष है। जिस प्रकार बन्धन युक्त प्राणी स्वतन्त्र होकर यथेच्छ गमन करता है, उसी तरह कर्म–बन्धन मुक्त आत्मा स्वाधीन हो अपने अनन्त ज्ञान दर्शन सुख आदि का अनुभव करता है। फल की इच्छा से किया गया कार्य कर्त्ताभाव को जागृत करता है। अतः जब तक कर्त्ताभाव का त्याग नहीं होता तब तक अहंकार बना रहता है। अतः अहंकार त्यागकर कर्त्ताभाव को छोड़कर ईश्वरार्पण बुद्धि रखकर कार्य करने से कर्त्ताभाव से मुक्ति मिल जाती है।